



નમાઝ જમાઅત કે સાથ પઠ્ઠના ફર્મ હૈ

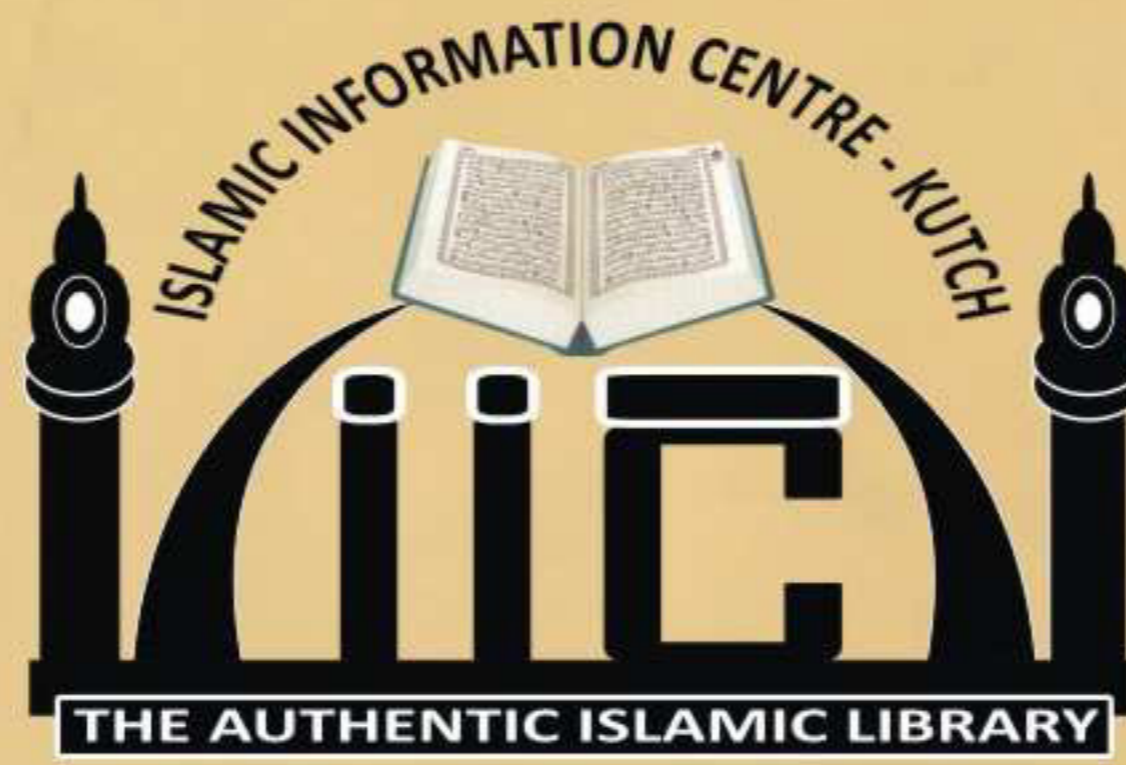
શૈખ અબ્દુલઅઝીઝ બીન અબ્દુલ્લાહ બીન બાઝ (રહ.)

બેનમાઝી ડા અંજામ

શૈખ મુહમ્મદ બીન સાલેહ ઉષયમિન (રહ.)

તરજુમા : અબુ અબ્દુલ્લાહ મુહમ્મદ હારૂનખાન મુહમ્મદી સલફી

ગુજરાતી લીપીયાંતર : મૌલાના સફી સયદા (નડીઆદ)



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ना इर्ज़ है

ये पैगाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन जाज़ की तरफ़ से तमाम मुसलमानों के लिये है. अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत इरमाये. और उनको जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अता इरमाये.

अस्सलामु अलयकुम व रहमतुल्लाहि व बरक़ातुहू अम्मा बअद:

मुझे मालुम हुवा के बहोत से लोग जमाअत से नमाज़ पढ़ने में सुस्ती और काहिली से काम लेते हैं. षबूत और दलील के लिये ये कहते हैं के इलां और इलां उलमा (मौलाना लोग) तो इस मसअले में ये सहूलत देते हैं और ये कहते हैं. (पगैरह) लिहाज़ा मुज पर ये जिम्मेदारी आर्घट होती है और ये मेरा इर्ज़ है कि मैं इसकी अज़मत, अहमियत, इज़ीलत, शान व मरतबे को पाज़ेह तौर पर बयान कइं जिसकी अहमियत व अज़मत जुद अल्लाह तआलाने अपनी किताब कुर्आन मज्जिद में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लमने अहादिष में बयान इरमा दी है. इस में सुस्ती, काहिली, कोताही करना किसी मुसलमान के लिये ज़ाईज़ नहीं है. अल्लाह तआलाने कुर्आन मज्जिद में जगह जगह नमाज़ का तज़क़िरा डीया है. नीज़ इसकी अज़मत, मुहाज़िज़त और जमाअत से नमाज़ अदा करने पर बहुत ज़यादह ज़ोर दिया है. इस में काहिली व सुस्ती करने को मुनाफ़िडीन की अलामत व निशानी बताया है. यूनांये कुर्आन करीम में अल्लाह तआला का इरमान है:

“हाज़िज़ू अलस स-ल-पाती वस्सलातिल पुस्ता व इम् लिल्लाहि डानितीन.”

(सुर: बकरह : २३८)

तरजुमा : सब नमाज़ो की हिज़ाज़त तो करो ही करो और जास तौर पर बीयपाली नमाज़ (नमाज़े असर) की ओर अल्लाह के लिये अदब से जडे रहा करो.

आप मुसलमानों को नमाज़ की हिज़ाज़त करनेवाले और उसकी ताज़ीम करनेवाले हैं, ये किस तरह पहचानोगे? जब कि वोह नमाज़ को अपने लाइयों के साथ पढ़ने में पीछे रह कर सुस्ती व काहिली से काम लेते हैं.

अल्लाह तआला का इरशाद है: **“व अडीमुस्सलात व आतुज़ ज़का-त वर-क़ी मअर-राक़िबन.”** (सुरअे बकरह : ४३)

तरजुमा : और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और जुकनेवालों के साथ जुक जाओ. ये आयते करीमा जमाअत से नमाज़ पढ़ने और नमाज़ीयों के साथ नमाज़ में शामिल होकर नमाज़ अदा करने पर पाज़ेह व ठोस षबूत और दलील है. अगर इस आयते करीमा का मकसद सिई नमाज़ कायम करना व पढ़ना ही होता तो

आयत के आभरी टूटते “पर-क़ी मअर-राक़िफ़न” इकुअ करो इकुअ करनेवालों के साथ यानी जुक़ जाओ जुक़ने वालों के साथ के जयान करने का मतलब व पजह समज में नहीं आती या क़िफ़ ही नहीं की जाती क्यूंकि नमाज़ के कायम करने का हुक़म तो आयत के शुइअ ही में दिया जा यूका था. निज़ अल्लाह तआला का इरमान है: **“पयज़ा कुन्त इीहिम इ-अ-क़म-त लहमुस-सला-त इल तकुम तार्थइतुम मिन-हुम म-अ-क़ पल यअ-जुज़् असलि-ह-तहुम इ यज़ा स-ज-दू इल-यकूनु मिंय परार्थकुम पल तअ-ति तार्थइतुन उज-रा लम युसल्लू इलयसल्लू म-अ-क़ पल यअ-जुज़् हिज़-रहुम व अस-लि-हतहुम.”** (सुर: निसाअ : १०२)

तरजुमा : और आप (अे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम) जब उनमें (मुजाहिदीन के दरम्यान) मोजुद हों, फिर (जंग की हालत में) उन्हें नमाज़ पणहाने लगे तो उनमें की अेक जमाअत आप के साथ मुसल्लेह (हथीयार लीये हुये) जणी हो फिर जब वोह सजदा कर ले तो पीछे आ जाये फिर दुसरी वोह जमाअत ज़सने अमी नमाज़ नहीं पणही है उनकी जगह आ जाये फिर वोह भी आपके साथ अपना जयाप करते हुये अपने हथीयार लीये हुये नमाज़ अदा करे.

तो जब अल्लाह तआलाने हालते जंग मे जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने को वाजुब व ज़रूरी करार दिया और जमाअत से नमाज़ पणहने को माइ नहीं किया तो हालते अमन व येन में कैसे छुट मिल सकती है ?

जमाअत के साथ नमाज़ न पणहने की अगर किसी को एजाज़त होती तो दुश्मनों के आमने सामने मुकाबले के लीये सइ बांधे ऐन लडाए के लीये तैयार मुजाहिदों के लीये जमाअत के जगैर नमाज़ पणहने की बदरजह उला एजाज़त होती. मगर ऐसी सप्ततरीन हालत में भी उन्हें जमाअत छोणकर नमाज़ पणहने की एजाज़त नहीं. जब ये उनके लिये षाबित नहीं तो फिर मालुम हुवा कि जमाअत से नमाज़ पणहना अहम व ज़रूरी वाजुबात में से है और किसीके लिये जमाअत के जगैर यानी जमाअत छोणकर नमाज़ पणहना जायज़ नहीं है.

जुजारी व मुस्लिम में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरपी है वो कहते है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया:

“यकीनन मैंने ये एरादा कर लिया कि नमाज़ कायम करने का हुक़म हुं (जमाअत जणी हो जाने के बाद) फिर किसी अेक आदमी को हुक़म हुं कि वोह उन लोगों को नमाज़ पणहाये फिर कुछ लोगों को साथ लेकर चलुं उनके साथ लक़डीयों के गच्छे हों और उन लोगों के पास जाउ जो लोग नमाज़ में हाज़िर नहीं होते हैं और उन्हें घरों समेत जला हुं.

सहीह मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन मस्उद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वोह कहते हैं कि हमें जुब मालुम है नमाज़ से पीछे रहनेवाला या तो पकड़ा मुनाज़िक था जिसकी मुनाज़िकत झाहिर हो गय हो या बिमार आदमी ही पीछे रहता था. यहां तक कि बिमार आदमी भी दो आदमियों का सहारा लेकर झरूर नमाज़ में हाज़िर हुवा करता.

और अब्दुल्लाह बिन मस्उद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये भी कहा कि बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ने हमें हिदायत के रास्ते व तरीके बतलाये उन्ही तरीके में ये तरीका भी सिखाया कि हम उन मस्जिदों में (जमाअत के साथ) नमाज़ पढ़ें जहां भी अज़ान होती हो. (यानी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना इर्ज़ है)

और सहीह मुस्लिम ही में उन्ही अब्दुल्लाह बिन मस्उद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, आपने इरमाया जिसे ये बात पसंद है कि वोह कल बरोज़े क्यामत अल्लाह से इस्लाम (मुसलमान) की हालत में मिले तो जब कभी वोह अज़ान सुने नमाज़ को जमाअत से पढ़ने की पाबंदी कर ले.

इस लिये कि अल्लाह तआलाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमके लिये हिदायत के रास्ते मुर्करर इरमाये हैं और उन्ही हिदायत के रास्तों में से हिदायत का अेक रास्ता नमाज़ भी है. अगर तुम पीछे रहेनेवाले मुनाज़िक की तरह पीछे रह कर हुजरो में नमाज़ पढ़ने लगे तो तुमने अपने नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत को छोण दीया, और जब तुमने नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत को छोण ही दीया तो तुम गुमराह हो गये (बहक गये). जो शप्स भी जुशूअ जुज़ूअ और जुब अरछे तरीके से पुज़ू करता है फिर उन मस्जिदों में से किसी अेक मस्जिद की तरफ़ चलता है तो अल्लाह तआला उसके हर कदम के बदले नेकीयां लिखता है. उसके दरजे बुलंद इरमाता है और उसके गुनाहो को मिटा देता है. और हमे अरछी तरह मालुम है कि पकड़ा व मशहूर मुनाज़िक ही नमाज़ से पीछे रहा करता था. यहां तक बिमार आदमी दो आदमियों के सहारे लाया जाता और उसे सड़ में जणा कर दीया जाता था.

और सहीह मुस्लिम ही में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुसे मरपी है कि अेक नाबीना शप्स (अंधा आदमी) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास आकर अर्ज़ करने लगा कि अय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम मुजे मस्जिद तक लानेवाला कोय नहीं हे तो क्या मेरे लिये इजाज़त हे कि मैं हुजरे ही में नमाज़ पढ़ लिया कइं ? आपने इजाज़त दे दी. जब वो शप्स लोट कर वापस जाने

लगा तो आपने बुलाया और पूछा क्या तुम अज्ञान सुनते हो उसने कहा हां सुनता हूं. तब आपने इरमाया फिर तो तुम्हें मस्जिद में आकर ही नमाज़ पढ़ना पड़ेगा. (तुम मस्जिद में आकर ही नमाज़ पढ़ो)

और अल्लाह के उन घरों (मस्जिदों) में जिन में अल्लाह का ऋक करने और उसके नाम को बुलंद करने का हुकम अल्लाह तआलाने दिया है उनमें जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने पर बेशुमार हदीषें दलायत करती हैं. (बहुत सी दलीलें हैं) नमाज़ की हिफ़ाज़त करना, उसके लिये जल्दी करना, अपनी ओलाद, अपने घरवालों, पड़ोसीयों और सभी दीनी व इस्लामी भाइयों को उसकी नसीहत करते रहना, अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करते रहना जिन बातों से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने रोका है उनसे इक्रे रहना हर मुसलमानका इर्ज़ है. मुनाफ़िकों की बुरी जसलतों की मुशाबहत से दूर रहना भी निहायत जरूरी है. जिनकी बुरी जसलतों के साथ उनका ऋक अल्लाहने जुद किया है, उन मुनाफ़िकों की तमाम जसलतों में सब से बुरी जसलत ये थी कि वोह लोग नमाज़ से सुस्ती, काहिली, गइलत भरतते थे. इसका ऋक अल्लाह तआलाने युं इरमाया है: **“इन्नल मुनाफ़िकीन युभादिअिनल्लाह व हु-व जादिअहुम व इन्ना काम् इलस-सलाति काम् कुसाला युराअिनन ना-स पला यऊ-कुइनल्ला-ह इल्ला कलीला. मुऊब-ऊबीन जय-न आलि-क ला इला हाउलाइ पला इला हाउलाइ व मंय युऊ-लिलील्ला-हु इ लन तअ-द लहू सबीला.”** (सुर:निसा : १४२, १४३)

तरजुमा : बेशक मुनाफ़िक लोग (उनकी अपनी सोच व पहम व गुमान में) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं (बहाने बाज़ीयां कर रहे हैं और चाल चल रहे हैं) हालांकि अल्लाह जुद उन्हें ही धोखे में डालनेवाला है. और जब कभी ये लोग नमाज़ पढ़ने भले होते हैं, लोगों को दिखाते हैं (दिखावा करते हैं) और अल्लाह को तो युं ही थोडा सा याद कर लेते हैं, भिय में लटके हुये हैं, न पुरे इधर हे न ही पुरे उधर. और ज़से अल्लाह तआला गुमराह कर दे उसके लिये आप कोइ राह न पाओगे.

क्युंकि जमाअत से नमाज़ न पढ़ना और जमाअत से पीछे रहना पुरे तौर से नमाज़ छोण देने के बराबर ही हे. और ये बात जुल्लम जुल्ला मालुम ही है कि नमाज़ छोणनेवाला काफ़िर व गुमराह है और इस्लाम के दायरे से जारिज है. (वोह मुसलमान नहीं) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमका इरमान ही उसकी पाउहेह दलील है कि **“आदमी और कुइ व शिर्क के दरभ्यान इरक सिई नमाज़ छोणने ही का है.”** (यानी नमाज़ छोणनेवाला काफ़िर और मुशरीक है) इस हदीष को इमाम मुस्लिमने सहीह मुस्लिम में ज़ाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिपायत कीया है. और

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ये इरमान भी मौजूद है कि “हमारे और उनके दरम्यान नमाज़ ही का तो अहद है, जिसने नमाज़ छोड़ दी हो वोह यकीनन काड़ीर हो गया. नमाज़ का जणा उंचा मरतबा है, नमाज़ पण्हना और उसकी पाबंदी करना वाजुब है, इस बात की दलील व सबूत के लिये बहुत सी कुरआन की आयतें और हदीषें मौजूद हैं.

और जब हक बात मुल्लम मुल्ला सामने आ जाये और उसकी दलीले और ठोस सबूत वाज़ेह अयां व ज़ाहिर हो जाये तो अब किसीके लिये भी ये बोलकर कि इलां का ये कोल है, इलां आलीम ये कहता है, ये केह कर जयना ओर दूर भागना हरगीज़ जायज़ नहीं है. क्युं की कुरआन की आयतों और अहादीषे रसूल की ठोस दलीलों के सामने कीसीकी कुछ न चलेगी.

अल्लाह तआला का इरशादा है: **“इधन तनाज़अ-तुम इी शय-धन इ इददुहु धलल्लाहि व रसूलिही धन कुन-तुम तुअ-मिनून बिल्लाहि वल यव-मिल आभिरि ज़ालि-क जय-इंप व अहसनु तअ-वीला.”** (सुर: निसा : ५८)

तरजुमा : फिर अगर तुम किसी चीज़ के बारे में झगड पणो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की तरफ़ लोटाओ (कुरआन व हदीष में तलाश करो.) अगर वाकई तुम्हारा अल्लाह और आपेरत के दिन पर धमान है, यही बेहतर है और अंजाम के अंतजार से भी बहुत अच्छा है.

अल्लाह तआला का इरमान है: **“इल यह ज़रिल्लज़ीन युजालिक्-न अन अम-रि-ही अन तुसी-जहुम इित-नतुन अप युसीजहुम अज़ाबुन अलीम.”** (सुर: नुर : ५३)

तरजुमा : (किसी भी मामले में) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के हुकम की मुजालिफ़त करनेवालों को डरना चाहिये कि (कहीं मुजालीफ़त की पादाश में) उन पर कोई आइत व मुसीबत ना आ जाये या उन पर कोई दर्दनाक अज़ाब नाज़ील न हो जाये.

ये बात किसी से ढकी छिपी नहीं है कि जमाअत से नमाज़ पण्हने के बहुत ज़यादह झायदे और मस्लेहतें हैं. उसकी जहेतरीन मिषाल आपस में अेक दुसरे से जान पहचान, नेकी और तकवा पर अेक दुसरे की मदद, हक बात और सजर की अेक दुसरे को तलकीन व नसीहत करना हैं. मज़ीद ये कि नमाज़ से पीछे रहनेवालों को जमाअत से नमाज़ पण्हने पर उभारना कम पणहे लीजे लोगों को दीने इस्लाम की बाते जतलाना मुनाफ़िकों से नइरत करना, उनके चाल चलन और मिशन से दूर रहना, कहेने और अमल करने के साथ साथ अल्लाह के जंटो को अल्लाह के हुकमो को

बतलाकर अल्लाह की तरफ़ दख़्त देना, बुलाना पग़ैरह इस तरह के और भी बहुत से शायदे हैं.

अल्लाह तआला मुझे और आप लोगों को उन कामों की तपड़ीक दे ज़न कामों से वोह राज़ी व पूश होता है और ज़न में दीन व दुनिया की बलाघ पाघ जाती है और हमे नइसानी प्वाहिशात की बुराघ और बुरे आमाल, काड़ीरों और मुनाफ़िकों जैसे काम करने से बचने की तपड़ीक अता इरमाअे, बेशक वोह बहुत ऊयादा देनेवाला और माइ करनेवाला है.

परसलामु अलयकुम व रहमतुल्लाहि व ब-र-क़ातुहू व सल्लल्लाहु अला नबिअियना मुहम्मदिं व आलिही व सह-बिही, अज-मघन.

वे नमाज़ी का अंजाम

नमाज़ के मुतअल्लिक इज़ीलतुश शोभ मुहम्मद बिन सालेह अल उषयमिन रहमतुल्लाह अलयहि से पुछे गअे सपालात के ज़वाबात अेक अरबी क़िताबये से लिये गअे है. ज़नका उर्दू तरजुमा गुजराती लीपीमे पेशे जिदमत है.

सपाल : उस शअ्स को क़या करना चाहीये जे अपने घरवालों को नमाज़ पण्हने के लिये कहे लेकिन उसके घरवाले उसकी न माने (यानी नमाज़ न पण्हें) तो क़या ऐसे शअ्स को उनके साथ मिल जुल कर रहना चाहीये या घर से निकल जाना चाहीये ? (और कहीं अलग जाकर रहना चाहीये ?)

ज़वाब : जब उस शअ्स के घरवाले मिलकुल ही क़मी नमाज़ न पण्हते हो तो बेशक वोह लोग काफ़िर हैं, मुरतद हैं, दीने इस्लाम से फ़िरे हुवे हैं, इस्लाम से ખारीज हैं, मुसलमान नहीं हैं ऐसे नमाज़ी शअ्स को उन वे नमाज़ियों के साथ रहना ज़ाईज नहीं है. हां, लेकीन उस शअ्स का इर्ज़ है कि वोह उन लोगों को नमाज़ पण्हने के लिये कहता रहे, इसरार करता रहे और उन्हे बार बार नमाज़ की ताकीद करता रहे शायद अल्लाह तआला उन लोगों को हिदायत दे दे. इसलिये की क़िताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और सहाबा के अक़वाल की रोशनीमें नमाज़ छोणनेवाला बेशक काफ़िर है. अल्लाह हमें ऐसे काफ़िर बनने से बचाअे. (आमीन)

कुर्आन से दलील: कुर्आन मज्द में अल्लाह तआला मुशरिकों के बारे में इर्शाद इरमाता है: “इ इन ताबू व अक़ामुरसला-त व आतुज़ ऊक़ात इ इभ-वानुकुम इद-दीन.” (सुर: तौबा : ११)

तरजुमा : फिर अगर ये लोग तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने के पाबंद बन जायें और झकात देते रहें तब तो ये तुम्हारे दीनी भाई हैं।

आयत का साफ़ साफ़ मतलब ये है कि अगर ये लोग ये सब चीज़ें न करें यानी (तौबा न करे, नमाज़ न पढ़ें, झकात न दें) तो फिर ये लोग तुम्हारे दीनी भाई नहीं हैं। जब कि गुनाहों से दीनी भाईयारगी ज़त्म नहीं होती अगर ये जणा गुनाह ही क्युं न होता हो। लेकिन इस्लाम से पारिज हो जाने ओर निकल जाने से भाईयारगी ज़त्म हो जाती है। जो मुसलमान नहीं वोह हमारा भाई भी नहीं।

अहादीथ से दलील: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया: “आदमी के और कुफ़ व शिर्क के दरम्यान नमाज़ छोणने ही का इर्क है।” (नमाज़ छोणनेवाला काफ़ीर व मुशरीक हो जाता है) इसे तिरमिज़ी ने रिपायत कीया है और कहा हदीथ हसन सहीह है। और ये हदीथ मुस्लिम में भी है। नीज़ आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ये इरमान जो सुनन की किताबों (हदीथो) में मपजूद है ज़से बुरयदह रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिपायत किया है:

तरजुमा : हमारे और उन (काफ़ीरों, मुशरीकों और मुनाफ़िकों) के दरम्यान नमाज़ ही का अहद व पैमान है। ज़सने नमाज़ छोण दी तो वोह यकीनन काफ़ीर है। (नपवी ने कहा के इस हदीथ को तिरमिज़ी ने सहीह सनद के साथ किताबुल इमान में रिपायत कीया है।)

सहाबा के अक़वाल से दलील: अमीरुल मुअमिनीन उमर इब्न अलफ़ अक़ब रज़ियल्लाहु अन्हु इरमाते हैं: “नमाज़ छोणनेवालेका इस्लाम में कोय हिस्सा नहीं।” (यानी नमाज़ छोणनेवाला मुसलमान नहीं) और ‘हज़ज़’ के मअना हिस्सा व नसीब के होते हैं। इस लइज़े ‘हज़ज़’ अरबी ग्रामर के लिहाज़ से यहां आम मअना होगा कि न थोणा न बहुत बल्के उसका इस्लाम में कुछ भी हिस्सा नहीं है। और अब्दुल्लाह बिन शकीक इरमाते हैं: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के सहाबा नमाज़ छोणने के अलावा कीसी भी काम के छोणने को कुफ़ नहीं समजते थे यानी उनके नज़दीक सब से जणा ज़ुर्म नमाज़ छोणना था।”

अक़ली दलील: ये बात अक़ल में आती है कि ज़स इन्सान के दिल में राई के दाने ज़राबर भी इमान हो और उसे नमाज़ की अज़मत, अहमियत और उसके ज़रीअे से अल्लाह का इज़ल, इरम, इनायत सब कुछ यानी अल्लाह व रसूल के नमाज़ के बारे में सप्त से सप्त हुक़म अच्छी तरह मालुम हो ये सारी चीज़ें मालुम होने के बापजूद वोह नमाज़ छोण दे ? ये चीज़ मुमकिन ही नहीं है कि वोह सब कुछ मालुम होने के बाद भी नमाज़ छोण दे। और मैंने इन बातों पर ज़ूज गोर व इफ़

किया उनको बेनमाज़ी को काफ़िर न कहनेवाले लोग षबूत के तौर पर पेश करते हैं, गोर व फ़िक्र कर लेने के बाद में इस नतीजे पर पहुंचा कि उनकी दलीलें चार अक़्वाल से ज़ाली हैं।

- (१) अक़ तो ये कि बे नमाज़ी को काफ़िर न कहने की सिरे से उनके पास कोई दलील ही नहीं है।
- (२) या तो उसे अक़ ऐसी सिद्ध की कैद लगा दी गई है जिसके होते हुये नमाज़ छोड़ना मुश्किल है।
- (३) या फिर उसमें किसी ऐसी हालत की कैद लगा दी गई है जिस हालत में नमाज़ छोड़नेवाला माज़ुर व मजबूर होगा।
- (४) या तो वोह दलील आम है, उसे वोह हदीसे पास कर देती हैं जिसमें ये ज़यान है कि नमाज़ छोड़नेवाला काफ़िर है।

(१) और जब मुल्लम मुल्ला ये षाबित हो गया कि बेशक़ नमाज़ छोड़नेवाला काफ़िर है तो उस पर ये अहक़ाम और क़ानून लागू होंगे के बेशक़ उससे शादी ब्यान करना ज़ाहज़ नहीं है। अगर उसका निकाह इस हालत में हो ज़अे कि वोह बेनमाज़ी है तो उसका निकाह ज़ातिल है। यानी उसका निकाह ही नहीं होगा। उसके लीये बीवी हलाल नहीं होगी क्युंकि अल्लाह तआलाने उन औरतों के ज़ारे में जो हिज़रत करके आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम और मुसलमानों के पास चली आय थीं ये हुक़म दीया कि **“इ धन अलिम-तुमहुन्न मुअ-मिनातिन इला तर-जुहिहुन्न धलल कुइशर. ला हुन्न हिल्लुल लहुम पला हुम यहिल्लून लहुन्न.”** (सुर: मुमतहिना : १०)

तरजुमा : फिर अगर तुम्हें ये मालुम हो ज़अे कि वोह औरतें धमानवाली हैं (मोमिना हैं) तब फिर उन्हें काफ़िरो की तरफ़ मत लोटाये क्युंकि ये धमानवाली औरतें उन काफ़िरो के लिये हलाल नहीं और ना ही काफ़िर लोग धन धमानवाली औरतों के लीये हलाल हैं।

और इसी तरह से आदमी निकाह हो जाने के बाद नमाज़ छोड़ दे तब तो ऐसी हालतमें उसका निकाह ही फ़िस्क (जल्म) हो ज़अेगा. और ऐसी सूरत में बीबी उसके लिये हलाल नहीं होगी. अभी जो आयत गुज़री वही इसका षबूत और उसकी दलील है।

(२) बे नमाज़ी के हाथ की ज़बह ही हुध चीज़ भी नहीं जाना चाहीये. क्युं ? इस लिये कि उस बेनमाज़ी के हाथ की ज़बह की हुध चीज़ हराम है. अगर कोई यहूदी या नसरानी (इसाध) कोई चीज़ ज़बह करे उसका जाना तो हमारे लीये हलाल है. ऐसी सूरत में उस बेनमाज़ी का ज़बीहा (बे नमाज़ी के हाथ की ज़बह की हुध चीज़) यहूदी

और इसाई के ऋषीहों के मुकाबले में कही ज्यादा बदतर और बुरा है. (अल अयाजु बिल्लाह)

(3) उस बे नमाज़ी के लिये मक्का मुकर्रमा या हरम के हुदू में दाखिल होना भी हलाल व जायज़ नहीं है. अल्लाह तआला के इस हुकूम के मुताबिक **“या अय्युहल्लाज़ीन आमन् इन्नमल मुश-रिक्-न न-जसुन इला यक-रबुल मश्जदल हराम बअ-द आभिहिम हाज़ा.”** (सुर: तोबा : २८)

तरजुमा : अय इमानवालो ! बेशक मुशरिक लोग अकदम नापाक है. इस साल के बाद वोह लोग मश्जदे हराम (अयतुल्लाह, काबा) के करीब भी ना इटकने पाये.

(४) अगर उस बेनमाज़ी के करीबी रिश्तेदारों में से कोई मर जाये तो उस मरनेवाले की मिराषमें (वोह माल जो मरने के बाद मरने वाले के करीबी रिश्तेदारों में तक्सीम होता है.) उस बेनमाज़ी का कोई हिस्सा नहीं है. सवाल पैदा होता है कि मरनेवाले का बेटा बेनमाज़ी है यानी मरनेवाला शम्स बाप तो नमाज़ पढ़ता है या लेडीन उसका बेटा बेनमाज़ी है और उसी मरनेवाले का अक दूर के रिश्ते से भतीजा है और वोह नमाज़ी है तो उन दोनों में से उस मरनेवाले के मालका कोन पारिष होगा ? यानी मीराष किसको मिलेगी ?

तो उसका जवाब ये है कि उसका पारिष मरनेवालेका दूर के रिश्ते का भतीजा होगा. उसका बेनमाज़ी बेटा उसके माल का पारिष नहीं होगा. क्युंकि उसका बेटा बेनमाज़ी है इस लिये काफ़िर है और मुसलमान की पिराषत काफ़िर के लिये और काफ़िर की मुसलमान के लिये हलाल व जायज़ नहीं है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के इरमान के मुताबिक ज़से उसामा रज़ियल्लाहु अन्हुने बयान किया है:

“मुसलमान का पारिष काफ़िर नहीं होगा और ना ही काफ़िर का पारिष मुसलमान होगा. यानी दोनों अक दुसरे के माल के पारिष नहीं हो सकते.”

(५) जब बेनमाज़ी मर जाये तो उसे गुस्ल भी न दिया जाये और उसे कड़न भी न पहनाया जाये और ना ही उसके जनाजे की नमाज़ पढ़ी जाये और ना ही उसे मुसलमानों के साथ मुसलमानों के कब्रस्तानो में दफ़न किया जाये. तब हम उस बेनमाज़ी की लाश के साथ क्या सुलूक करें ?

हम उसके साथ ये सुलूक करें कि उसे जंगल में ले जाकर और उसके लिये गढा खोदकर उसे उसी पहने हुये कपड़ों समेत दफ़न कर दें. इस लिये कि उसकी कोई हुरमत व इज़्ज़त नहीं.

इसी तरह किसी के पास या किसीके घर में किसी ऐसे शम्स की मोत हुई जो बेनमाज़ी था और उसे अच्छी तरह मालुम है कि मरनेवाला बेनमाज़ी था तो उसे

યાની મરનેવાલેકો મુસલમાનોં કે પાસ બેનમાઝી કા જનાઝા પઠવાને કે લીચે ન લાયે કિ ઉસકી નમાઝે જનાઝા પઠવાના જાઈઝ નહીં.

(૬) ઉસ બેનમાઝીકા હશ્ર કયામત કે દિન ફુફ વ કાફિરોં કે બળે બળે સરદારોં ફિરઓન, હામાન, કારૂન ઓર ઉબય ઈબ્ને ખલફ કે સાથ હોગા.

અલ્લાહ કી પનાહ ! ઓર વોહ શખ્સ જન્નત મેં ભી દાખિલ નહીં હોગા ઓર ઉસકે અહલ વ અચાલ રિશ્તેદારોં મેં સે કિસીકો ભી ઈસકે લિચે રહમત વ મગફિરત કી દુઆ કરના જાઈઝ નહીં હૈ. ક્યુંકિ વોહ કાફિર હોનેકી વજહ સે ઉસ દુઆ કા હકદાર નહીં હૈ. ફરમાને ઈલાહી હૈ: “**મા કા-ન લિન્નબીથિય વલ્લઝી-ન આમનૂ અંચ યસ્તગ-ફિરૂ લિલ મુશ-રિકીન વ લવ કાનૂ ઉલી ફુર-બા મિમ બઅ-દિ મા તબચ-ન લહુમ અન્નહુમ અસ્હાબુલ જહીમ.**” (સુર: તોબા : ૧૧૩)

નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કો ઓર ઈમાનવાલોં કો મુશરિકોં કે લીચે મગફિરત કી દુઆ કરના જાઈઝ નહીં. અગર ચે વોહ ફરીબી રીશ્તેદાર હી ક્યું ન હોં. ચે બાત ઝાહિર વ વાઝેહ હો જાનેકે બાદ કિ બેશક વોહ સબ કે સબ લોગ જહન્નમી હૈ.

મેરે ભાઈઓ મસઅલા બળા ખતરનાક ઓર નાઝુક હૈ. બળે અફસોસ કી બાત હૈ કિ ફુછ લોગ નમાઝ કે મામલે મેં બળી સુસ્તી વ કાહિલી બરતતે હૈં. ઓર બે નમાઝીયોં કો ઘરોંમે રહને દેતે હૈં હાલાંકિ બે નમાઝીયોં કો ઘરોં મે રહને દેના જાઈઝ નહીં. **વલ્લાહુ અઅલમુ, વ સલ્લલ્લાહુ અલા નબીથિના મુહમ્મદિંવ વ અલા આલિહી વ સહ-બિહી અજ-મઈન.**

સવાલ : કયા ચે જાઈઝ હૈ કિ આદમી અપની ઓલાદ કો ઘર મેં છોળકર ખુદ અકેલા હી નમાઝ પઠવાને કે લીચે નિકલ જાએ. યાની ખુદ તો નમાઝ પઠવાને જાએ ઓર અપની ઓલાદ કો નમાઝ પઠવાને ના લે જાએ તો કયા ઐસા કરના જાઈઝ હૈ?

જવાબ : ઈન્સાનકા ફર્ઝ હૈ કિ વોહ અલ્લાહ કે હુકમોં કો નાફિઝ (લાગુ) કરે. જૈસા કિ અલ્લાહ તઆલા કા હુકમ હૈ: “**યા અચુહલ્લઝી-ન આમનુ ફૂ અન્કુ-સકુમ વ અહ-લિકુમ નારા. વ ફૂદુહન્નાસુ વલ હિજા-રતુ અલયહા મલાઈકતુન ગિલાઝુન શિદાદુલ લા યઅ-સુનલ્લા-હ મા અ-મ-રહુમ વ ચફ-અલૂન મા યુઅ-મરૂન.**”

(સુર: તહરીમ : ૬)

તરજુમા : “અચ ઈમાનવાલો અપને આપકો ઓર અપને અહલ વ અચાલ

(बीबी, बच्चे, मा, बाप, भाई, बहन और जानमान) को उस जहन्नम से बचा लो जिसका ईंधन ईन्सान और पत्थर है। उस पर ऐसे सप्त इरीशते मुर्दर हैं के अल्लाह तआला उन्हें जो भी हुकम देता है उसकी पल भर भी नाइरमानी नहीं करते हैं। और वोह वही सब कुछ करते हैं जिस काम का भी उन्हें हुकम दिया जाता है। (अल्लाह जो हुकम देता है वोह वही और उतना ही करते है ना ञयादा ना ही कम)

आदमी पर अपने घरवालों को नमाज का हुकम देते रहना वाजुब है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्यहि व सल्लमने इस बातका हुकम दिया है:

“जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाये तो उन्हें नमाज पढ़ने का हुकम दो और जब दस साल के हो जाये और नमाज ना पढ़े तो उन्हें मार मार कर नमाज पढ़ाओ और अपने बिस्तरों से उन्हें अलग सुलाओ। (रवाहु अहमद व अबू दावूद)

और इसी तरह से अल्लाह तआला ने ईस्माईल अल्यहिस्सलाम का तऊकरा इरमाते हुये कहा: **“व का-न यअ-मुइ अह-लहु बिस्सलाति वळ-ऊकाति व का-न ईन्द रब्बिही मर ऊिया.”** (सुर: मरयम : ५५)

तरुजमा : ओर वोह अपने घरवालों को नमाज और ऊकात का हुकम दिया करते थे और वोह अपने रब के पास पसंदीदा ईन्सान थे।

आदमी के लिये जाईज ही नहीं कि वोह अपनी औलाद को नमाज के लिये ना जगाये और उन्हें अपने पीछे चुं ही सोता पणा रहने दे और फुद नमाज के लिये चला जाये। और इसी तरह अपनी औलाद को नमाज के लिये सिई जगाना भी काई नहीं है बल्के उनको जगाने के बाद अपने साथ नमाज के लिये ले जाना भी जरूरी है क्युं कि वोह अपनी औलाद को सिई जगायेगा और साथ में लेकर नहीं जायेगा तो वोह जागने के बाद टोबारा इर सो जायेंगे। हां, अपनी औलाद को जगाने के बाद ऐसी हालत मे निकलता है कि वोह लोग तो घर ही में हैं और उसी शप्स को ये भी डर लगा हुवा है कि मैं उनको साथ में ले चलने के चक्कर मे रहूंगा तो मेरी भी जमाअत जायेगी हालांकि वोह चाहता तो यही है कि वोह अपनी औलाद को नमाज के लिये जगाये भी और साथ में लेकर भी जाये। जमाअत छुटने के डर से घर से निकलना पण रहा है तब तो ऐसी सूरते में घर से नमाज के लिये निकल जाये। नमाज पढ़ कर उनके पास हालात मालुम करने के लिये कि उनके बच्चों ने और घरवालोंने नमाज पढ़ी है कि नहीं पढ़ी है टोबारा घर लोट आये। लेकिन अगर उनको जगाये भी नहीं या अगर जगाये भी तो ऐसे पकत में जगाये कि फुद तो नमाज पढ़ कर आ चुका और आने के बाद जगा रहा है या इर नमाज को जाने से

પહલે જગા ભી રહા હૈ તો ઐસે વકત મેં કિ બસ ઘર સે અબ નમાઝ કે લીચે નિકલ રહા હૈ. એક બાર, દો બાર બોલા, ઉઠાયા ઓર ચે બહાના કરતે હુવે નમાઝ કે લીચે નિકલ પળા કિ મુજે ડર હૈ કહીં મેરી નમાઝ ના છુટ જાએ વગેરહ તો ઈસ તરહ કી ઉસકી સારી હરકતે ઝયાદતી હૈ બલકે ઉસકો તો અપને ઘરવાલોંકો ઓલાદ કો ઉનકે હાલાત કે મુતાબિક જગાતે રહના ચાહીચે. અગર વોહ લોગ જાગને કે મામલે મેં સુસ્ત વ કાહિલ હૈ તો ઉન્હે કુછ દેર પહલે જગા દેના ચાહીચે (તાકિ ના ઉસકી નમાઝ છુટે ઓર ના ઉનકી નમાઝ છુટે) ઓર અગર વોહ લોગ જાગને કે મામલે મેં સુસ્ત વ કાહિલ નહીં હૈ ચુસ્ત હૈ તો ઉન્હે ઐસે વકત પર જગા દેના ચાહીચે કિ જાગને કે બાદ આસાની કે સાથ નમાઝ મેં શામિલ હો સકે. ઉનકે હાલાત કે મુતાબિક કરે. જેસા ઉનકે હાલાત હોં ઈસે વેસા હી રવેચા ઈખ્તિયાર કરના ચાહીએ. અલ્લાહ હમ સબકો જમાઅત કે સાથ નમાઝ કી પાબંદી કરને કી તૌફીક ઈનાયત ફરમાએ. આમીન.

વલ્લાહુ અઅલમુ વ સલ્લલ્લાહુ અલા નબીયિના મુહમ્મદિંવ વ અલા આલિહી વ સહ-બિહી અજ-મઈન.

નમાઝ પઢનારાઓ માટે ૩૦ (ત્રીસ) ખૂશ ખબર

મુસ્લિમ બિરાદરો ! લાઈલાહ ઈલ્લાહ અને મુહમ્મદુર રસૂલુલ્લાહની ગવાહી આપ્યા પછી એક મુસલમાન ઉપર જે સૌથી મોટી ફરજ લાગુ થાય છે તે પાંચ વખતની નમાઝો છે. તે નમાઝ જે કુફ્ર, શિર્ક અને મોમિન બંદા દરમ્યાન ફરક અને તફાવત કરનાર છે અને ઈસ્લામ તથા કુફ્ર વચ્ચે અંતરાય છે. જેના વિશે કયામતના દિવસે સૌથી પહેલા પૂછવામાં આવશે. જે નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વસલ્લમની આંખોની ઠંડક છે, અને જે તેમના જીવનની અંતિમ પળોની વસિયત છે. તદ ઉપરાંત નમાઝ તેની પાબંદી કરનારાઓ, સાર-સંભાળ રાખનારાઓ નમાઝીઓ માટે પોતાની અંદર ખૂબ જ વિશેષતાઓ ખૂશખબરીઓ ધરાવે છે.

નમાઝની વિશેષતાઓ (ફઝીલતો) બાબત કેટલીક મહાન ખૂશ ખબરીઓ કુર'આન અને સહીહ હદીષોના હવાલા સાથે આપની સેવામાં પ્રસ્તુત છે. ઈન શા અલ્લાહ આ ખૂશખબરીઓ આપની અંદર નમાઝની પાબંદીનો શોખ અને લાગણીઓ જગાડશે.

૧) નમાઝ બધા જ અમલોથી સવિશેષ (અફઝલ) અમલ છે.

હઝરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસઉદ (રઝિ.) કહે છે કે મેં રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.વ.) ને પૂછ્યું કયો અમલ સૌથી અફઝલ છે ? આપ (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું: નમાઝને તેના સમય પર અદા કરવું. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૨) નમાઝ બંદા અને તેના રબ વચ્ચે સંપર્ક અને માધ્યમ છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું : અર્થાત્ જ્યારે તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિ નમાઝ પઢે તો તે પોતાના રબથી ગૂપચૂપ વાતો કરી રહ્યો હોય છે. (બુખારી)

૩) નમાઝ દીનનો સ્તંભ છે.

આપ (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું અર્થાત્ બધા જ કામોની સરદાર ઈસ્લામ છે. અને તેનો સ્તંભ નમાઝ છે. (તિર્મિઝિ)

૪) નમાઝ નૂર (રોશની) છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું “અસ્સલાતુ-નુરુન” નમાઝ નૂર (રોશની) છે. (મુસ્લિમ)

૫) નમાઝ નિફાક (દંભ) થી છૂટકારો છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું મુનાફીકો (દંભીઓ) ઉપર ફજર અને ઈશાની નમાઝોથી વધુ કોઈ નમાઝ ભારી નથી. અને જો તેમને ખબર પડી જાય કે આ બંને નમાઝોની અંદર શું (પિશેષતા, ફઝીલત) છે, તો તેઓ આ બંને નમાઝો માટે જફર આવે. પછી ભલે ને તેઓને ગોઠણ (અથવા ઢેકાઓ) દ્વારા ઘસડાઈને કેમ ન આવવું પડે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૬) નમાઝ આગ (જહન્નમ) થી બચાવે છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું તે વ્યક્તિ આગ (જહન્નમ) માં દાખલ નહીં થાય જે સૂર્યોદય પહેલા અને સૂર્યાસ્ત પહેલાની નમાઝ પઢતો રહ્યો હોય એટલે કે ફજર અને અસરની નમાઝ. (મુસ્લિમ)

૭) નમાઝ બેશર્મી અને ખરાબ વાતોથી બચાવે છે.

અલ્લાહનું ફરમાન છે અર્થાત્ જે કિતાબ તમારી તરફ વહય (ઈલાહી સંદેશ) કરવામાં આવી છે તેને પઢો અને નમાઝ કાયમ કરો. નિઃશંક નમાઝ બે-શર્મી અને બુરાઈઓથી રોકે છે. (સૂર : અલ-અનકબૂત આ.નં. ૪૫)

૮) નમાઝ અગત્યના કામોમાં મદદરૂપ છે.

અલ્લાહનું ફરમાન છે અર્થાત્ તમે લોકો સબ્ર (ધીરજ) અને નમાઝ વડે મદદ પ્રાપ્ત કરો. (સૂર : અલ બકરહ આ.નં. ૧૫૩)

૯) જમાઅત સાથે નમાઝ પઢવી તે એકલા પઢવાથી અફઝલ છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જમાઅત (સમૂહ) સાથે નમાઝ પઢવી એકલા પઢવામાં આવતી નમાઝ કરતા સતયાવીસ ગણી બેહતર (અફઝલ) છે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૦) નમાઝી માટે ફરિશ્તાઓ રહમત અને મગફિરત (કૃપા અને માફી) ની દુઆઓ કરે છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિ જ્યાં સુધી પોતાની નમાઝની જે તે જગ્યાએ છે જ્યાં તેણે નમાઝ પઢી છે ફરિશ્તાઓ તેના માટે દુઆઓ કરતા રહે છે. જ્યાં સુધી કે તેનું વઝુ ન તૂટે. તેઓ કહે છે અય અલ્લાહ ! તું તેને માફ કરી દે. અય અલ્લાહ ! તું તેના પર રહમ કર. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૧) ગુનાહોની માફીની ખૂશખરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું અર્થાત્ જેણે નમાઝ માટે વઝુ કર્યું અને સંપૂર્ણ વઝુ કર્યું

ત્યારબાદ ફર્જ નમાઝ માટે ચાલી નીકળ્યો અને લોકો અથવા જમાઅત સાથે કે મસ્જિદમાં જઈ નમાઝ પઠી તો અલ્લાહ તેના ગુનાહોને માફ કરી આપશે. (મુસ્લિમ)

૧૨) શરીર ગુનાહોથી પાક (સ્વચ્છ) થઈ જાય છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું અર્થાત્ તમારો શું ખ્યાલ છે કે અગર તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિના દરવાજા પાસે એક નહેર વહી રહી હોય તેમાં તે દરરોજ પાંચ વખત નહાતો હોય તો શું તેના શરીર ઉપર કોઈ જાતનો મેલ બાકી રહેશે ? સહાબહ (રઝિ.) એ જવાબ આપ્યો, તેનો કોઈપણ જાતનો મેલ બાકી રહેશે નહીં. નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું બિલકુલ આજ મિસાલ (ઉદા., દ્રષ્ટાંત) પાંચ વખતની નમાઝોની છે કે તેમના વડે અલ્લાહ તઆલા ગુનાહોને મિટાવી દે છે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૩) જન્નતમાં મિજબાનીની ખૂશખબરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે વ્યક્તિ સવારે કે સાંજના સમયે મસ્જિદમાં જાય છે તો અલ્લાહ તેના માટે જન્નતમાં મિજબાની તૈયાર રાખે છે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૪) મસ્જિદ તરફ જવામાં એક પગલા ઉપર એક ગુનાહ માફ થાય છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જેણે પોતાના ઘરેથી પાકી, સફાઈ કરી પછી અલ્લાહની ફર્જ કરેલ નમાઝોમાંથી કોઈ નમાઝ પઢે તો તેનું એક પગલું એક ગુનાહને દૂર કરે છે. (મુસ્લિમ)

૧૫) નમાઝ માટે જલદી આવનારાઓ માટે મહાન વળતરની ખૂશખબરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું અગર લોકોને ખબર પડી જાય કે અઝાન કહેવામાં અને પહેલી સફમાં નમાઝ પઢવાનો શું સવાબ (વળતર) અને વિશેષતા છે. તો તેના માટે કુર'આ અંદાઝી કરવા સિવાય છૂટકો ન હોત તો તેઓ જરૂર તેના માટે કુર'આ અંદાઝીનો માર્ગ અપનાવત અને જો તેમને ખબર પડી જાય કે નમાઝ માટે જલદી આવવામાં શું અજો સવાબ (વળતર) રહેલો છે તો તેઓ તેના માટે જરૂર ઉતાવળ કરશે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૬) નમાઝની પ્રતિક્ષા (ઇતેઝાર) કરનાર સદંતર નમાઝમાં જ રહેનાર ગણાશે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું, તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિ સતત નમાઝની જ હાલતમાં રહે છે જ્યાં સુધી નમાઝ તેને રોકી રાખે છે. તેને પોતાના ઘરે પાછો ફરવા માટે રોકી રાખનાર નમાઝ જ હોય છે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૭) જેની આમીન ફરિશ્તાઓની આમીન સાથે મળી ગઈ તેના અગાઉના ગુનાહો માફ કરી દેવામાં આવે છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જ્યારે તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિ આમીન પોકારે અને આકાશોમાં ફરિશ્તાઓની પણ આમીન સાથે થઈ જાય (બન્નેની આમીન એક જ સમયે થઈ જાય) તો તેના અગાઉના નાના ગુનાહો માફ કરી દેવામાં આવે છે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૧૮) અલ્લાહની હીફાઝત અને અમન (સુરક્ષા, આશ્રય) ની ખૂશખબરી

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું, જેણે સવારની નમાઝ પઠી તે અલ્લાહની જવાબદારી અને આશ્રયમાં આવી ગયો. માટે હે આદમપુત્ર ! ધ્યાન રાખ ક્યાંક અલ્લાહ તઆલા તારાથી પોતાની જવાબદારીમાંથી કોઈ માંગણી ન કરી લે. (મુસ્લિમ)

૧૯) ક્યામતના દિવસે સંપૂર્ણ રોશનીની ખૂશ ખબરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું અંધકારમાં મસ્જીદો તરફ જનારાઓને ક્યામતના દિવસે સંપૂર્ણ રોશની, પ્રકાશની ખૂશખબરી આપી દો. (તિર્મિઝી, અબુદાવુદ)

૨૦) જમાઅત સાથે ફજર અને અસરની નમાઝ પાબંદી સાથે પઢનારાઓ માટે જન્નતની ખૂશખબરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે વ્યક્તિ બે ઠંડી નમાઝો એટલે કે ફજર અને અસર પઢતો રહ્યો તે જન્નતમાં દાખલ થશે. (બુખારી, મુસ્લિમ)

૨૧) પુલ-સીરાત પાર કરી જન્નતમાં પહોંચવાની ખૂશખબરી.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું મસ્જીદ દરેક મુતકિ અને પરહેઝગારનું ઘર છે અને તે વ્યક્તિ માટે જેનું ઘર મસ્જીદ હોય અલ્લાહતઆલા રાહત અને રહેમત અને પુલ-સીરાત પાર કરી અલ્લાહની પ્રસન્નતા એટલે કે જન્નતમાં પહોંચાડવાનું વચન આપ્યું છે. (તબરાની, શૈખ અલ અલ્બાનીએ આ હદીષને સહીહ ગણી છે.)

૨૨) નમાઝ તેની પાબંદી કરનારા માટે ક્યામતના દિવસે મુકિત છૂટકારાનું કારણ બનશે.

નબી (સ.અ.વ.) એ નમાઝનું વર્ણન કરતા ફરમાવ્યું, જેણે નમાઝની હિફાઝત, જાળવણી કરી તેના માટે નમાઝ ક્યામતના દિવસે પ્રકાશ, દલીલ અને નજાત (મુકિત) નું કારણ હશે અને જેણે તેની પાબંદી ન કરી તેના માટે કોઈ જાતનો પ્રકાશ, દલીલ કે બચવાનું કારણ હશે નહીં. અને તે ક્યામતના દિવસે કાફર, ફિરઓન, હામાન અને ઉબયદબ્ને ખલફની સાથે હશે. (મુસ્નદઅહમદ, દારમી)

૨૩) નમાઝ ગુનાહોનું વળતર છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું પાંચ સમયની નમાઝો, એક જુમ્અહથી બીજી જુમ્અહ અને એક રમઝાનથી બીજા રમઝાન તેમના દરમ્યાન થનારા ગુનાહો માટે કફ્ફારો (માફી) છે. સિવાય કે કબીરા ગુનાહો (મોટા ગુનાહો) આચરવામાં ન આવ્યા હોય. (મુસ્લિમ)

૨૪) નમાઝ નબી (સ.અ.વ.) ની સાથે જન્નતમાં જવાનું એક મોટું કારણ છે.

હઝરત રબીઅહ બિન અસ્લમી (રઝિ.) કહે છે કે હું નબી (સ.અ.વ.) ની સાથે રાત પસાર કરતો હતો. આપ (સ.અ.વ.) ના વઝુ માટે પાણી લઈ આવતો અને આપની જરૂરીયાતોને પૂરી કરતો હતો. (એક વેળાએ) આપ (સ.અ.વ.) એ મને કહ્યું, માંગો ! તો મેં કહ્યું, હું જન્નતમાં આપની સાથે રહેવા માંગું છું. નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું આના સિવાય કોઈ બીજી માંગણી છે ? મેં કહ્યું ફક્ત આ જ માંગણી છે. તો નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું વધુમાં વધુ નફ્લી નમાઝો વડે તમારી જાત ઉપર મારી મદદ કરો. (મુસ્લિમ)

૨૫) બે નમાઝો વચ્ચે થનારા ગુનાહો અલ્લાહ માફ કરી આપે છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે મુસલમાન વ્યક્તિ વુઝુ કરે છે અને ખુબ સારી રીતે વુઝુ કરે છે ત્યારબાદ કોઈ નમાઝ અદા કરે છે તો અલ્લાહતઆલા તેની આ નમાઝ અને તેના પછીની નમાઝ દરમ્યાન થનારા ગુનાહોને માફ કરી દે છે.

૨૬) નમાઝ પઢનારના પિતેલા ગુનાહો માફ કરી દેવામાં આવે છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે મુસલમાન વ્યક્તિ કોઈ ફર્ઝ નમાઝને પ્રાપ્ત કરે છે. પછી તેના માટે ખૂબ જ સારી રીતે વઝુ કરે છે અને તે નમાઝ પઢવામાં ખૂબ જ આજીજી, દિલગીરી વ્યક્ત કરે છે તો આ નમાઝ તેના પાછલા ગુનાહોનો બદલો બની જાય છે. જ્યાં સુધી કે તે કબીરા ગુનાહો ન કરે અને આ સીલસીલો આખી જિંદગી સુધી ચાલુ રહે છે. (મુસ્લિમ)

૨૭) નમાઝની રાહ જોવી અલ્લાહની સરહદોની પહેરેદારી કરવા બરાબર છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું શું હું તમને તે વસ્તુ બાબત માહિતી ન આપું જેના વડે અલ્લાહ ભુલોને માફ કરે છે અને દરજજાઓને વધારે છે. સહાબાહ (રઝિ.) એ કહ્યું હે અલ્લાહના રસૂલ કેમ નહીં ? જરૂર બતાવો. નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું ઠંડી કે બીમારીમાં, તકલીફ અને અણગમો હોવા છતાં પૂરેપૂરું વઝુ કરવું, મસ્જીદો તરફ વધુને વધુ જવું અને એક નમાઝ પછી બીજી નમાઝની રાહ જોવી. આ જ અલ્લાહના સીમાડાઓ છે. આ જ અલ્લાહની સરહદો છે. (મુસ્લિમ)

૨૮) નમાઝ માટે જવું મુહરીમ (હાજી) ના સવાબ બરાબર છે.

રસૂલ (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે માણસ પોતાના ઘરેથી વુઝુ કરી કોઈ ફર્ઝ નમાઝ માટે નીકળ્યો તો તેનો સવાબ એહરામ ધારણ કરેલ હાજીના સવાબ જેટલો છે. અને જે માણસ ચાશતની નમાઝ માટે નીકળ્યો અને તેને આ જ નમાઝ થકવી દે છે તો તેનું સવાબ ઉમરાહ કરનારના સવાબ બરાબર છે અને એક નમાઝ પછી બીજી નમાઝ પઢવા દરમ્યાન કોઈ ખરાબ કામ ન કર્યું તો આવો માણસ ઈલ્લીયીન (નેક લોકોના રૂહનું રજીસ્ટર) માં લખી લેવામાં આવે છે. (અબુદાઉદ)

૨૯) જે મારી નમાઝથી (સંજોગોવસાત) પાછળ રહી ગયો પરંતુ તે (કાયમી) નમાઝીઓ માંથી છે તો તેના માટે જમાઅતમાં હાજર રહેનારાઓ બરાબર સવાબ છે.

નબી (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જે વ્યક્તિએ વઝુ કર્યું અને ખૂબ જ સારી રીતે વઝુ કર્યું પછી નમાઝ માટે નીકળ્યો અને લોકોને એવી હાલતમાં જોયા કે તેઓ નમાઝ પઢી ચૂક્યા હતા તો અલ્લાહતઆલા તેને તે લોકો બરાબર બદલો અને સવાબ આપશે. જેમણે તે નમાઝ જમાઅત સાથે પઢી છે. અને તેનાથી તેમના બદલા કે સવાબમાં કોઈપણ જાતની કમી કરવામાં આવશે નહીં. (સહીહ અબુદાવુદ)

૩૦) જ્યારે માણસ વઝુ સાથે નમાઝ પઢવા માટે નીકળે છે તો તે પાછો ફરવા સુધી નમાઝની હાલતમાં ગણાય છે.

રસૂલ (સ.અ.વ.) એ ફરમાવ્યું જ્યારે તમારામાંથી કોઈ વ્યક્તિ પોતાના ઘરમાં વઝુ કર્યા પછી મસ્જીદમાં આવે તો તે પાછા ફરવા સુધી નમાઝની હાલતમાં હોય છે, માટે તેને જોઈએ કે તે આ જાતનું કોઈ કામ ન કરે. પછી આપ (સ.અ.વ.) એ પોતાના એક હાથની આંગળીઓને બીજા હાથની આંગળીઓને ટાપલ કરી (એટલે કે કોઈ બેહુદુ ખરાબ કામ ન કરે) (સહીહ ઈબ્ને ખુઝેમહ)

ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત પુસ્તકો

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	લેખક
૦૧	સિરતુન્નબી (સ.અ.વ.) કિવઝ	અબુ વસીમ અ.રહીમ મુહમ્મદી
૦૨	ગુનાહે કબીરા	ઇમામ શમ્સુદ્દીન ઝહબી (રહ.)
૦૩	દુઆએ	મો. શાહીદ જામઇ 'રાજકોટી'
૦૪	સ્ત્રીઓના વિશિષ્ટ મસાઇલ	શૈખ સાલેહ અલ ફઉઝાન
૦૫	મીલાદુન્નબી અને મોહબ્બતે રસુલ (સ.અ.વ.)	ડો. ફઝલૂર્રહમાન મદની
૦૬	સીરતે નબવી અને ગેરઇસ્લામી વિચારો	મો. અબુલઆસ વહીદી
૦૭	નમાઝ ની સઝાવટ	મો. મુહમ્મદ ઇસ્માઇલ સામરોદી
૦૮	યા અલ્લાહ મદદ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૦૯	અહમ દીની અસ્બાક	શૈખ અ.અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ
૧૦	રોઝાના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૧	ઝકાતના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૨	હજજ અને ઉમરાહના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૩	ફઝાઇલે કુર્આન મજીદ (સંક્ષિપ્ત)	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૪	દુઆ કે મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૫	શૈતાન કા ઇન્ટરવ્યુ	મુહસીન હિજાજી
૧૬	તફસીર સૂર: બકરહ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૧૭	કલમાએ તોહીદ કા મઅના...	મુહમ્મદ ઉમેર ટોંકી
૧૮	જિન, જાદુ ઓર બિમારીઆ દૂર કરનેકા ઇલાજ	સઇદ બિન અલી બિન વહફ અલ કહતાની
૧૯	દીન કે તીન અહમ ઉસુલ	શૈખુલ ઇસ્લામ મુહમ્મદ અત્તમીમી
૨૦	એહલે સુન્નત વલ જમાઅત કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બિન સાલેહ અલ ઉષૈમીન
૨૧	મુસલમાન કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બિન જમીલ ઝૈનુ
૨૨	નબી (સ.અ.વ.) કી નમાઝ	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.
૨૩	સૂર: યાસીન	મતન ઓર તર્જુમા